गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

भाषा सिर्फ बोलने का ढंग नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व और पूर्वजों की विरासत की वो आवाज़ है, जो हमें पहचान देती है।

राजपाल

सत्र : 2025-26

मार्च, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 15 मार्च 2026
चैत्र | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

सामाजिक यथार्थ का आईना

महादेवी वर्मा

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
ग़ज़ल
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

मार्च का माह अनेक महत्वपूर्ण दिवसों का साक्षी है, जो हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक करते हैं। यह माह हमें न केवल अपने अधिकारों का बोध कराता है, बल्कि कर्तव्यों और सुरक्षा के प्रति भी सचेत करता है। आइए, इन महत्वपूर्ण दिवसों के अवसर पर हम संकल्प लें कि एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

४ मार्च: राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस - यह दिवस हमें सुरक्षा के प्रति सजग रहने का संदेश देता है। जीवन के हर क्षेत्र में सुरक्षा सर्वोपरि है - चाहे वह यातायात सुरक्षा हो, कार्यस्थल पर सुरक्षा या फिर डिजिटल सुरक्षा। हम सबका दायित्व है कि स्वयं भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षा के प्रति जागरूक करें।

८ मार्च: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - यह दिवस नारी शक्ति को सम्मान देने का पावन अवसर है। जब महिलाएं सशक्त होंगी, तभी एक सशक्त समाज का निर्माण होगा। हमारा महाविद्यालय सदैव महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिए प्रतिबद्ध है। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जहां हर महिला सुरक्षित, सम्मानित और आत्मनिर्भर हो।

१५ मार्च: विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस - एक सचेत उपभोक्ता ही एक सशक्त उपभोक्ता है। यह दिवस हमें हमारे अधिकारों के प्रति जागरूक करता है - सुरक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, चुनने का अधिकार और सुनवाई का अधिकार। हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए और किसी भी प्रकार की उपभोक्ता अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए।

१६ मार्च: राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस - यह दिवस हमें स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की प्रेरणा देता है। टीकाकरण ने अनेक बीमारियों पर विजय पाई है। कोविड-१९ महामारी ने हमें सिखाया कि टीकाकरण कितना महत्वपूर्ण है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है, इसलिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना हम सबका कर्तव्य है।

२१ मार्च: विश्व वन दिवस - वन धरती के फेफड़े हैं। यह दिवस हमें पर्यावरण संरक्षण और वनों के महत्व को समझाता है। जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के इस युग में, वनों का संरक्षण हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। आइए, हम सब मिलकर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लें।

इन सभी दिवसों का मूल संदेश यही है कि हम एक जागरूक, सुरक्षित और जिम्मेदार समाज का निर्माण करें। महाविद्यालय परिवार की ओर से इन महत्वपूर्ण दिवसों के अवसर पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में आप सबकी सहभागिता अपेक्षित है।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

जागरण और सामूहिक दायित्व का महीना

मार्च का महीना भी अपने आप में अनेक महत्वपूर्ण दिवसों का संग्राहक है, जो हमें सामूहिक चेतना और राष्ट्रीय कर्तव्य का बोध कराते हैं। यह महीना हमें केवल त्योहारों और छुट्टियों का अहसास नहीं देता, बल्कि हमारे अंदर एक नागरिक, एक मनुष्य और एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में जागर पैदा करता है। महाविद्यालय की इस पत्रिका के माध्यम से हम इन दिवसों की प्रासंगिकता और उनसे मिलने वाली प्रेरणा पर प्रकाश डालना चाहेंगे। यह महीना राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति हमारी जिम्मेदारी का स्मरण कराता है। राष्ट्र की सुरक्षा केवल सीमाओं पर खड़े सैनिकों का ही दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। अपने आसपास के वातावरण में असुरक्षित गतिविधियों पर नजर रखना, सुरक्षा नियमों का पालन करना और आपात स्थिति में प्रशासन का सहयोग करना भी राष्ट्रीय सुरक्षा का ही अंग है। एक जागरूक नागरिक ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण करता है। इसी माह हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी मनाते हैं, जो समाज की आधी आबादी को समान अवसर और सम्मान दिलाने का संकल्प दोहराने का दिन है। आज भी हमारे समाज में महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि जब तक महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के समान सशक्त नहीं होंगी, तब तक समाज का विकास संभव नहीं है। यह केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि प्रतिदिन के व्यवहार में समानता उतारने का अभियान है। विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस हमें एक जागरूक उपभोक्ता होने का पाठ पढ़ाता है। आज के बाजारवादी युग में जहां हर ओर भ्रामक विज्ञापन और मिलावट का बोलबाला है, वहां एक सजग उपभोक्ता होना नितांत आवश्यक है। अपने अधिकारों को जानना, गुणवत्ता की मांग करना और अनियमितताओं के खिलाफ आवाज उठाना हर नागरिक का कर्तव्य है। राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस हमें स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने और बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण के महत्व को समझाता है। कोविड महामारी ने हमें सिखाया कि कैसे टीकाकरण एक सुरक्षा कवच की तरह काम करता है और पूरे समाज को बड़ी बीमारियों से बचा सकता है। यह दिन विशेष रूप से बच्चों और गर्भवती महिलाओं के नियमित टीकाकरण की याद दिलाता है, जो एक स्वस्थ समाज की नींव है। अंत में विश्व वन दिवस हमें प्रकृति से जुड़ने और उसके संरक्षण का संदेश देता है। वन हमारी पृथ्वी के फेफड़े हैं, जो हमें स्वच्छ हवा और जीवन देते हैं। बढ़ता औद्योगीकरण और शहरीकरण वनों को लगातार नुकसान पहुंचा रहा है। यह दिवस हमें वृक्षारोपण, वन संरक्षण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है। इन सभी दिवसों को मनाने का वास्तविक उद्देश्य केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि इनसे जुड़े मूल्यों को अपने जीवन में उतारना है। एक विद्यार्थी के रूप में, एक भावी नागरिक के रूप में, हमारा दायित्व है कि हम इन दिवसों के संदेशों को आत्मसात करें और एक जिम्मेदार, जागरूक और संवेदनशील समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। यही इन दिवसों की सार्थकता होगी और यही हमारे महाविद्यालय की पत्रिका का उद्देश्य भी।

संपादक

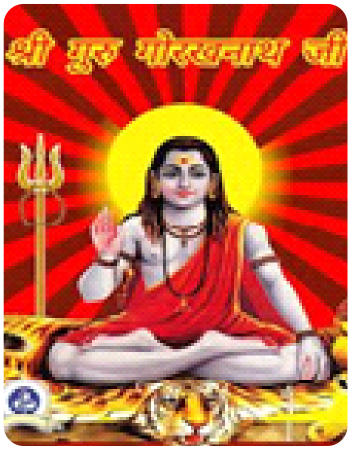

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

चरपट माथ अथवा चर्पटीनाथ

चर्पटीनाथ की रचनाएँ डॉ० मोहन सिंह की पुस्तक गोरखनाथ एण्ड मिडिवल हिन्दू मिस्टिसिज्म के परिशिष्ट, डॉ० कल्याणी मालिक की रचना सिद्ध सिद्धान्त पद्धत्ति एण्ड अदर वर्क्स आव नाथ योगीज, डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल की रचना योग प्रवाह तथा नाथ सिद्धों की बानियाँ (संपादक डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी) में संकलित की गई हैं। चर्पट मंजरी नाम से इनकी रचनाओं का एक शतक गोरख टिल्ला योग प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने भी प्रकाशित किया है।

इनकी रचनाओं का मुख्य स्वर बाह्य आडंबरों का खण्डन, योगी का स्वरूप, नारी निन्दा," योग अभ्यास तथा रसायन विद्या है। इनके भनुसार सभी रिश्ते-नाते झूठे हैं क्योंकि -
किसका बेटा किसकी बहू, आप सवारथ मिलिया सहू। जेता फूल तेता काल, चरपट कहे ए संऊ आल जंजाल ।।"
अतः वे कहते हैं : -
मन नहीं मूडै, मू'डै केस, केसां मूड्या क्या उपदेश।
मूडै नहीं मन मरदक मान, चरपट बोलै तत गियान।
अपनी रचनाओं में इन्होंने गोपीचन्द्र को अपना गुरु भाई कहा है। इन्होंने उन उपायों का भी वर्णन किया है जिनसे अजरा-अमरता प्राप्त होती है क्योंकि इसके बिना पिण्ड पात हो जाता है और पिण्ड सिद्धि योगी के लिए आवश्यक है।

५-६ मुकुन्द राज
मुकुन्दराज महाराष्ट्र-परम्परा के प्रमुख नाथ कवि हैं। विवेकसिन्धु तथा श्रीपरमामुत इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

५-६.१ 'विवेकसिन्धु' गुरु शिष्य सम्वाद शैली में लिखा गया है। इसकी रचना इन्होंने राजा जैस्रपाल के भतीजे शारंगधर को धर्मोपदेश देने के लिए की थी। इस ग्रन्थ में जीव, ब्रह्म, माया, पंचमहाभूत, सगुण-निर्गुण आदि तत्त्वों का विषद निरूपण किया गया है। इसमें गुरु एवं शिष्यों के लक्षणों का भी व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके अनुसार गुरु कृपा से शिष्य का अज्ञान दूर हो जाता है और सच्चिदानन्द उसके हृदय में प्रवेश कर जाता है।
"श्री गुरु कृपा करें, फिटे अज्ञान मुररें। मग सच्चिदानन्द उरे, परब्रह्म तें ॥
प्रपंचों के कारण माया जीवात्मा को भटका देती है, जिससे उसे ब्रह्मानुभूति नहीं हो पाती। इस सन्दर्भ में रजोगुण तथा तमोगुण दोनों ही शिष्य अथवा साधक के समक्ष व्यवधान प्रस्तुत करते हैं। इस स्थिति में ब्रह्म के सगुण अथवा निर्गुण स्वरूप की आराधना से उसकी जीवात्मा शुद्ध एवं पवित्र हो जाती है।

"रजतमौं जें समैल, तें चित्त वेगी होय निर्मल। मग निर्गुणीं भक्ति प्रेमल, शुद्ध आपैसें होय ।।८५

निर्गुण ब्रह्म और जीत्रात्मा के अद्वैत से महासुख के अतिरिक्त समरसता उत्पन्न हो जाती है अथवा अष्टांग योग की साधना से चित्त में निर्मलता आतीहै और वह परमात्म-तत्त्व के साथ अद्वैत अथवा अभिन्न हो जाती है। फलस्वरूप जीव मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

"निर्गुणी परम पुरुषी, जीवासि ऐक्यता होय सेखीं। तिये महासौरवीं, समरस तो ।।
ता तरि अष्टांग योगें, चित्त शुद्ध होए वेगें।
जीऊ परमात्मेया संगें। पावे कैवल्य ।।"

गुरु गोरखनाथ के पद

ॐ नमो सिवाय बाबू, ॐ नमः सिवाय । अह निसि बाई मंत्र, कौणें रे उपाय ॥ भिंने भिंने अख्यरे जे, देवै रे समुझाय। ताका मैं चेला, बाबू सो गुरु हमार ॥ टेक ॥ ॐकार आछे बाबू, मूल मंत्र धारा, ॐकार व्यापीले सकल संसारा। ॐकार नाभी हृदै देव गुर सोई, ॐकार साधे बिना सिधि न होई ॥ नादै लीन ब्रह्मा नादै लीना नरहरि, नादै लीना उमापति जोग ल्यौ धरि धरि। नाद ही तौ आछै बाबू सब कछू निधानां, नाद ही थें पाइये परम निरबांनां ॥ बाई बाजै बाई गाजै बाई धुनि करै, बाई षटचक्र बेधै अरधैं उरधैं मधि फिरै। सोहं बाई हंसा रूपी पिंडे पिंडे बहै, बाई कै प्रसादि बिंद गुरमुख रहै ॥ मन मारे मन मरै मन तारे मन तिरै, मन जे अस्थिर होई त्रिभुवन भरै। मन आदि मन अंत मन मधे सार, मन ही तैं छूटै बाबू विषै विकार ॥ सक्ति रूपी रज आछै सिव रूप बिंद, बारह कला रज आछै सोलह कला चंद। चार कला रवि कीजै ससि घर आवै, तो सिव सक्ति सम होवै, अंत कोई न पावै ॥ एही राजा राम आछे सर्वे अंगे बासा, ये ही पाँचौं तत बाबू सहज प्रकासा। ये ही पाँचौं तत बाबू समझि समांनां, बदंत गोरखनाथ हरिपद जांनां ॥

ॐ मंगलसूचक शब्द है। ॐ शिव को नमस्कार। ॐ शिव को नमस्कार। वायु मन्त्र (श्वास) दिन-रात चलता है, इसे संयमित करने का क्या उपाय है? जो मुझे इसके अलग-अलग अक्षर समझा दे, मैं उसका शिष्य रहूँगा और वह मेरा गुरु होगा। इस वायु मन्त्र के प्रवाह का मूल ॐकार है। यह ॐकार सारे जगत में व्याप्त है। यह ॐकार नाभि चक्र और हृदय चक्र में है। यही देव है, यही गुरु है। ॐकार को साधे बिना सिद्धि नहीं होती। ॐकार का अभिव्यक्त रूप नाद (ध्वनि) है। इस नाद में ही ब्रह्मा और विष्णु लीन हैं। शिव भी कुण्डलिनी पर संयम से योग धारण करके इस अनहद नाद में लीन है। इस नाद से सब कुछ आवृत है। नाद (अनहद) की प्राप्ति से निर्वाण होता है। वायु नाद के रूप में बजती, गरजती और ध्वनि करती है। वायु शरीर के छह चक्र वश में करके ऊर्ध्व, निम्न और मध्य भाग में घूमती है। यही वायु आत्मा के रूप में, सब शरीरों में बहती है। वायु के शान्त होने पर बिन्दु, शिव स्थान (गुरमुख) में स्थिर होता है। (वायु से मन वश में आता है)। मन मारने से मर जाता है अर्थात् मन पर संयम करने से वह वीतराग होता है। मन को विषयों से मुक्त करने से वह भवसागर तर जाता है। यदि मन स्थिर हो जाए तो त्रिभुवन (शरीर) आनन्द से परिपूर्ण होता है। मन जीवन के आदि, मध्य और अन्त में सब जगह व्याप्त है। मन द्वारा ही विषय विकार छोड़े जा सकते हैं। हे बाबू ! रज शक्ति का रूप है और बिन्दु शिव का। सूर्य की बारह कलाएँ हैं और चन्द्र की सोलह। चार कला के लिए यदि रवि, चन्द्र के घर में आ जाए तो शिव और शक्ति सम हो जाएँ। यही समत्व राजा राम है (आत्मा का स्वरूप है) जिसका सब अंगों में निवास है। यही पाँचों तत्त्व प्रतिभासित करता है। इसका बोध हो जाने पर, पाँचों तत्त्व इसी में समा जाते हैं। गोरख कहता है कि हमने इस ब्रह्म को जान लिया है।

सूर्य की बारह कलाएँ - चिन्ता, तरंग, दम्भ, माया, परग्रहण, प्रपंच, हेत, बुद्धि, काम, क्रोध, लोभ, मोह।
चंद्र की सोलह कलाएँ - शान्ति, निवृत्ति, क्षमा, निर्मलता, निश्चलता, ज्ञान, स्वरूप, पद, निर्वाण, निर्विष, निरंजन, आहार, निद्रा, मैथुन, वायु, अमृत।

गुनाहों का देवता

(सामाजिक यथार्थ का आईना)

मैंने बहुत सुना इस उपन्यास के बारे में कि यह, प्रेम, त्याग, पवित्रता पर लिखा गया उपन्यास है। मेरे मन में बहुत उत्सुकता हुई इसको पढ़ने की और एक लम्बे इंतजार के बाद हिम्मत जुटा कर इसे पढ़ा और मैंने पाया की मेरा दृष्टिकोण बहुत विपरीत है।

गुनाहों का देवता मेरे दृष्टिकोण से -

उपन्यास में चन्दर का परिचय एक नायक के रूप में होता है। कवि ने बहुत कोशिश करी चन्दर को अंत तक एक नायक की ही छणी देने की, परंतु मैंने पाया कि इस उपन्यास का असली खलनायक तो चन्दर ही है। एक आम मनुष्य जो महान बनने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। लेकिन एक मनुष्य महान् बनने की चाहत से नहीं अपने कर्मों से महान् बनता है जिसमें चन्दर असफल रहा। सुधा एक मासूम-सी प्यारी-सी लड़की थी जो अपने जीवन को स्वतंत्रता से जीना चाहती थी। उसने चन्दर से पवित्रता भरा प्रेम किया जिसका चन्दर को कोई अहसास भी नहीं था। सुधा ने तो कभी-भी चन्दर से प्यार, शादी की बाते कही ही थी, चन्दर ही तो था जिसने सुधा को अपनी बातों में लिया। सुधा से बड़ी ऊंची-ऊंची बाते करी की मैं पवित्र रहूंगा, ऊंचा उठूंगा महान् दूंगा, परंतु किसके लिए?? किसको दिखाने के लिए?? अगर चन्दर सुधा पर दबाव न डालता तो, सुधा शादी ना करती और सुधा का ये हाल होता चन्दर सुधा को दिए हुए वचन निभा नहीं पाया। सुधा को नरक में धकेल कर खुद वासना मैं डूब गया। जब सुधा गई तो चन्दर ने पम्मी के लिए दरवाजे खोल दिए और अपनी पवित्रता का डोंग छोड़ दिया और सुधा जिसने चन्दर की हर एक बात मानी उसके लिए बेवजह अपने मन में नफरत पैदा करी। जो व्यक्ति शारीरिक वासना से नफरत करता था वहीं उस वासना में डूब गया उसका आनंद लेने लगा। जब पम्मी चली गई तो सुधा की तरफ चन्दर का झुकाव हो गया और अंत में जब सुधा 'मिह' गई तब बिनती को अपना लिया। चन्दर ने बस सुधा को ही नहीं अपनाया त्याग सिर्फ सुधा के हिस्से आया बिनती या पम्मी के नहीं। असल में चन्दर ने कभी सुधा से निभाना चाहा ही नहीं । चन्दर कभी भी सुधा को बदला हुआ देखकर उसकी तकलीफों को नहीं जान पाया। सुधा चन्दर के आगे एक जिन्दा लाश थी, परंतु वो कभी सुधा को नहीं समझ पाया। चन्दर ने सुधा से उत्स ऊपर खुद को रखा। असल में चन्दर में कभी भी सुधा से प्रेम किया ही नहीं, अगर सुधा से प्रेम करता तो वह कभी-भी सुथा और महानता में से महानता को न चुनता। सब हार कर अपने प्रेम को जीतता । सुधा को कभी-भी गैर हाथों में न देता। चन्दर ने सुधा के विश्वास की हत्या कर दी, उसके जीवन की रोशनी के दीप को एक झोंके में भुजा दिया। इस उपन्यास को प्रेम, त्याग, पवित्रता का नाम देकर प्रेम और त्याग का अपमान होगा। क्योंकि प्रेम व त्याग सिर्फ सुधा ने किया। सुधा के साथ चन्दर का नाम जोड़कर प्रेम, त्याग की मिसाल दे कर सुधा का ही अपमान होगा।

प्रेम तो कभी साधारण मनुष्य या कायर के लिए बना ही नहीं है। प्रेम असाधारण व्यक्ति कर व मिश्रा सकता है। कायर होतो होते है वो लोग जो कहते हैं कि प्रेम तो त्याग के लिए बना है नहीं।
प्रेम तो वो ताकत है जो एक कमजोर व्यक्ति को भी एक ताकतवर व्यक्ति बना देती है जो अपने प्रेम के लिए पूरी दुनिया से लड़ने के लिए अपने प्रेम को पाने के लिए तैयार हो।
वो प्रेम झूठा है जिसमें व्यक्ति अपने प्रेम और समाज में समाज को चुनता है। व्यक्ति हमेशा आसान रास्ता चुनता है और कायर लोगों के लिए प्रेम के को त्याग' सबसे आसान रास्ता है।
अंत में- पम्मी ने सही कहा था कि "हमदर्दी करना इस दुनिया में सबसे बड़ा पाप है।"
मेरे मन में बर्टी की कही गयी बात एक यास जगह बना गई कि " त्याग व्यक्ति को एक साधारण व्यक्ति बना देती है। जब वह कुछ करने से पहले ही हार मान लेता है तो वह एक साधारण बन जाता है और एक साधारण व्यक्ति कभी-भी महान नहीं बन सकता और ना ऊंचा उठ सकता है।
सुधा का दोष था कि उसने एक साधारण व्यक्ति से पवित्र व महान प्रेम किया था जिसकी सजा उसने मरते दम तक सजा भुक्ति ।
असल में चन्दर कभी देवता था ही नहीं वह एक पापी था जिसने खुद को महान बनाने के लिए एक मासूम लड़की की बली चढ़ा दी।
अंत में चन्दर ने हमे सत्य से परिचय कराया चन्दर न महार बन पाया न पवित्र रह पाया और उसकी सुधा को दी हुई जुबान झूठी थी।
चन्दर देवता नहीं एक पापी था !!

Manisha
Class - M. A Hindi 1st year
Roll no - 2252422002

1. Krishna- 20-03-1996
2. Kiran- 02-03-2004
3. Vinay Kumar- 03-03-2004

ENGISH PHRASES WORDS

1. Keep an eye on:
Please keep an eye on my bag while I'm away.

2. Make up your mind:
You need to make up your mind before it's too late.

3. Run out of time:
We are running out of time, so hurry up.

4. Give it a shot:
You should give it a shot and see what happens.

5. By heart:
She learned the whole poem by heart.

6. In hot water:
He got into hot water after missing the deadline.

7. Take it easy:
You look tired, just take it easy today.

8. Cut corners:
Don't cut corners while doing important work.

9. Go the extra mile:
She always goes the extra mile to help others.

10. Back to square one:
After the mistake, we are back to square one.

हिंदी साहित्य मे रहस्यवाद की प्रवर्तिका, समाज सुधारक व महिला मुक्तिवादी के नाम से जाना जाता है

हिंदी साहित्य में छायावाद के चार स्तंभों में से एक, पद्मभूषण से सम्मानित, और युगों तक स्मरणीय रहने वाली महादेवी वर्मा का नाम जब आता है, तो वह केवल एक कवयित्री के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में आता है। उन्हें हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका, समाज सुधारक और महिला मुक्तिवादी के रूप में जाना जाता है। उनका साहित्य और जीवन दोनों ही इन तीनों पहलुओं का ऐसा अद्भुत संगम हैं, जिसने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि हिंदी समाज, विशेषकर महिलाओं के जीवन-संघर्ष को एक नई दिशा भी प्रदान की।

रहस्यवाद की प्रवर्तिका
महादेवी वर्मा का काव्य संसार रहस्यवाद का अद्वितीय उदाहरण है। उनसे पूर्व हिंदी साहित्य में रहस्यवाद का स्वरूप स्पष्ट नहीं था, लेकिन उन्होंने अपने काव्य संग्रहों—'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा'—के माध्यम से इस धारा को एक नई पहचान दी। उनका रहस्यवाद कबीर या सूफियों की तरह ईश्वरीय चेतना तक सीमित नहीं था; बल्कि यह वेदना, विरह और आत्म-साक्षात्कार का एक मार्ग था। उनकी कविताओं में 'नीरजा' (कमल) का सौंदर्य, 'मधुर-मधुर' नदियों का बहाव, और 'अतीत' के प्रति गहरी व्यथा—यह सब बाहरी जगत के चित्रण से अधिक आंतरिक चेतना के उच्चतर सत्य की खोज है। उन्होंने 'मैं' की साधना को कविता का आधार बनाया। प्रेम उनके यहां भोग का विषय न होकर, 'यातना' और 'तपस्या' का रूप ले लेता है। उनका रहस्यवाद 'विरह' से 'मिलन' तक की यात्रा है, जहां प्रियतम (ईश्वर या चेतना) से बिछुड़ने की पीड़ा ही अंततः उस सत्ता से एकाकार होने का साधन बन जाती है। इसीलिए डॉ. रामकुमार वर्मा ने उन्हें 'रहस्यवाद की प्रवर्तिका' कहकर अभिनन्दित किया।

समाज सुधारक: प्रयाग महिला विद्यापीठ से लेकर जीवन-दर्शन तक महादेवी वर्मा केवल कलम से ही समाज सुधार नहीं कर रही थीं, बल्कि उन्होंने अपने जीवन को ही एक आदर्श के रूप में स्थापित कर दिया। उनका समाज सुधार का कार्य उनकी शिक्षा-दीक्षा और व्यावहारिक जीवन से अटूट रूप से जुड़ा था। इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में स्थापित 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' उनकी तपस्या का ही परिणाम था। यह संस्था उस समय की एकमात्र ऐसी पहल थी, जहाँ महिलाओं को पर्दे की बंदिशों से मुक्त करके, उन्हें आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कार और स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया जाता था। वह केवल प्रधानाचार्या नहीं थीं; वह उन छात्राओं की माँ, मार्गदर्शक और सहारा थीं, जो समाज के उपेक्षित वर्गों से आती थीं। उन्होंने महिलाओं के लिए 'होस्टल', 'हस्ताक्षर' (हस्तशिल्प) जैसी व्यवस्थाएँ विकसित कीं, ताकि वे आर्थिक रूप से भी सशक्त हो सकें। उनका मानना था कि समाज का सच्चा सुधार तभी संभव है जब महिलाएँ शिक्षित हों और उनमें आत्मनिर्भरता का भाव विकसित हो। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास का आधार बताया।

महिला मुक्तिवादी: संयम, स्वाभिमान और अस्मिता की यात्रा

महादेवी वर्मा का महिला मुक्तिवाद पाश्चात्य नारीवाद की तरह उग्र या आक्रामक नहीं था, लेकिन यह भारतीय परिवेश में महिला अस्मिता की सबसे मार्मिक और प्रभावशाली अभिव्यक्ति थी। उनका मुक्तिवाद सिर्फ पुरुष-प्रधान व्यवस्था का विरोध मात्र नहीं था, बल्कि यह महिलाओं के आत्म-सम्मान, आत्म-साक्षात्कार और उनकी 'व्यथा' को साहित्य का विषय बनाने का एक सशक्त माध्यम था।

उन्होंने स्वयं अपने जीवन में अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। पारिवारिक दबाव के बावजूद उन्होंने विवाह को 'आजीवन ब्रह्मचर्य' में बदल दिया और पति-पत्नी के पारंपरिक संबंधों को आपसी सम्मान और स्वतंत्रता का प्रतीक बनाया। उनकी रचनाओं में 'मैं' शब्द का प्रयोग उस समय की महिलाओं के लिए एक क्रांति थी, जब महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने अस्तित्व को परिवार और पति में विलीन कर दें।

उनके संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'चाँद' ने भी महिलाओं के मुद्दों को एक नई ऊँचाई दी। उन्होंने महिलाओं की शारीरिक और मानसिक पीड़ा, उनके अधिकारों और उनकी आकांक्षाओं को खुलकर मंच दिया। उनकी आत्मकथा 'अतीत के चलचित्र' और संस्मरण 'मेरा परिवार' में उन्होंने जिस सहजता और स्वाभिमान से अपने जीवन के संघर्षों को उकेरा, वह महिला मुक्तिवाद का सर्वोत्तम दस्तावेज है। उनके लिए मुक्ति का अर्थ था—समाज की बेड़ियों को तोड़ना नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर जीना, अपनी पीड़ा को पहचानना और उसे सृजन की ऊर्जा में बदलना।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा केवल एक साहित्यकार नहीं थीं; वह एक विचारधारा थीं। एक ओर जहाँ उन्होंने 'नीहार', 'रश्मि' और 'दीपशिखा' जैसी कालजयी रचनाओं से हिंदी कविता को 'रहस्यवाद' की गहनतम भूमि दी, वहीं दूसरी ओर उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ जैसी संस्था के माध्यम से समाज सुधार को मूर्त रूप दिया। एक महिला मुक्तिवादी के रूप में उन्होंने न केवल अपने जीवन से, बल्कि अपने साहित्य से भी यह सिद्ध कर दिखाया कि स्त्री की अस्मिता उसकी वेदना और उसकी तपस्या में निहित है।

आज, जब हम महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता की बात करते हैं, महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि सच्चा सुधार बाहरी दिखावे में नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना के जागरण में है। रहस्यवादी, समाज सुधारक और महिला मुक्तिवादी—इन तीनों भूमिकाओं को उन्होंने इतने सहज और प्रामाणिक रूप से जिया कि वह हिंदी साहित्य के इतिहास में 'सरस्वती' के रूप में अमर हो गईं

प्रियंका

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया है कि संसद २५ जनवरी १९६५ के पश्चात विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को किन्हीं प्रयोजनों के लिए उपबंध कर सकेगी? - अनुच्छेद ३४३
2. संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार राष्ट्रपति ५ तथा १० वर्ष के पश्चात राजभाषा आयोग की नियुक्ति करेगा? - अनुच्छेद ३४४
3. राजभाषा अधिनियम कब अस्तित्व में आया ? - १९६३ (यथा संशोधित १९६७) ⊓ राजभाषा अधिनियम में कुल कितनी धाराएँ थीं? -९
4. राजभाषा नियम कब पारित हुआ? - १९७६ (यथा संशोधित १९८७)
5. राजभाषा संकल्प कब पारित हुआ? - १९६८
6. भारत में पाए जाने वाले भाषा परिवार-

(१) भारोपीय परिवार
(२) द्रविड़ परिवार
(३) आस्ट्रो एशियाटिक या दक्षिण पूर्व एशियाई परिवार (आस्ट्रिक)
(४) बुरुशस्की (खुजना) परिवार एवं अण्डमानी
(५) चीनी-तिब्बती परिवार

3. हिन्दी किस भाषा परिवार की भाषा है? - भारोपीय परिवार
4. भारोपीय परिवार की शाखाएँ-

(१) भारत-ईरानी (आर्य) शाखा
(२) बाल्टो-स्लाविक शाखा
(३) आर्मीनी
(४) अल्बानी (इलीरी)
(५) ग्रीक (हेलेनिक)
(६) केल्टिक
(७) जर्मनिक या ट्यूटॉनिक
(८) इटालिक (रोमांस)
(९) हिढाइट (हित्ती)
(१०) तोखारी

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कान	कर्ण, श्रवणेंद्रिय
कानि	मर्यादा
कादंबरी	शराब
कादंबिनी	घटा
कोर	किनारा
कौर	ग्रास
क्रम	सिलसिला
कर्म	काम
कपिश	भूरा, बादामी

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
अकाल	सुकाल
अंगीकार	अस्वीकार
अतिवृष्टि	अल्पवृष्टि, अनावृष्टि
अति	अल्प
अर्वाचीन	प्राचीन
अज्ञ	विज्ञ
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अतुकांत	तुकांत
अकर्मक	सकर्मक
अनित्य	नित्य
अनुराग	विराग
अनुरक्त	विरक्त
अनुनासिक	निरनुनासिक
अल्पप्राण	महाप्राण

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Pension = पेंशन/सेवा-निवृत्ति वेतन

Pending = लंबित

Per bearer = वाहक द्वारा

Performance register = निष्पादन रजिस्टर

Periodical आवधिक/सामयिक पत्र-पत्रिका

Permissible = अनुज्ञेय

Permit = = अनुज्ञा-पत्र

Personnel कार्मिक

Perspective = संदर्श

Persuade = समझाना/मनाना/सहमत करना

Petition याचिका (RAS-98) =

Physical verification = प्रत्यक्ष सत्यापन

Picce wages = खुदरे काम की मज़दूरी

Portfolio = संविभाग

Postscript (P.S.) = पुनश्च

Post dated = उत्तर दिनांकित

Posthumous = मरणोपरांत

Posting = पदस्थापन

Post Pone = मुल्तवी करना/स्थगित करना

Precedence = पूर्वता/अग्रता

Precedent = पूर्व उदाहरण

Preliminary = प्रारंभिक

Premises = परिसर / अहाता

Prescribed = निर्धारित

Principal = प्रधान

Principle = सिद्धांत

Privilege Leave = उपार्जित अवकाश

Probability = प्रायिकता

Probation = परिवीक्षा/परख

Procedure - प्रक्रिया/कार्यवाही

Proceed on Leave = छुट्टी पर जाना

ग़ज़ल

अपने जमाने के जॉन एलिया बनना चाहते हैं शायर
बेहद दर्दीले कागजों पर खुद को आजमाते हैं शायर

जीने की तम्मन्ना रखते हुए दिल के किसी कोने में
मौत से हो गई है मोहब्बत झूठी बताते हैं शायर

है नहीं कोई दिलदार जो बिन कहे समझे जज्बात
दिल हल्का कर लेने को मुशायरे करवाते हैं शायर

अरे भोले-से लोगों किन की बातों में आ रहे हो तुम
इक्कठी करके जनता अपने ग़म खिलाते हैं शायर

जो कमरे भरे होने चाहिए थे तुम्हारी मौजूदगी से
उन खाली कमरों में तन्हाई के गीत गाते हैं शायर

ये जो कागज काले किए हैं बस तुम पढ़ो एक दफा
इससे ज्यादा तो और कुछ भी नहीं चाहते हैं शायर

शायर जन्म लेते हैं किसी से पहली मोहब्बत करके
लिखकर आखिरी मोहब्बत अपनी मर जाते हैं शायर

कागज से बने गिलासों में स्याह रंग की शराब घोल कर
दिल पर लगने वाले चुनिंदा अल्फ़ाज़ पिलाते हैं शायर

उस हसीना की जुल्फें उलझा ली कलम की नोक में
अगर वो सुलझाने बैठी तो याद आकर सताते हैं शायर

जज्बात लिख देने से कोई शायर नहीं हो गया विनय
शायरी के तराज़ू में आजकल तोले जाते हैं शायर

~ विनय पीड़िहार

ग़ज़ल

उनकी नज़दीकियाँ दिल लगाने लगीं,
इश्क़ की आग हमें अब जलाने लगी।

सुन थीं धड़कनें जो हमारे जिस्म की,
वो जवाँ बनकर अब धड़कने लगी।
इश्क़ की आग...

नज़रें झुकती हैं फिर कुछ कहती नहीं,
उसकी ख़ामोशियाँ ही अब बतलाने लगीं।
इश्क़ की आग...

कहते थे लोग उनको क़यामत की घड़ी,
वक़्त की सुइयों से अब बाहर आने लगी।
इश्क़ की आग...

दबाते थे अरमाँ अपने जग की शर्मसारी से,
हुस्न की बारीकियाँ अब वो दिखाने लगी।
इश्क़ की आग...

उम्र भर जो अल्फ़ाज़ ज़ुबाँ से कह न सकी,
होठ दाँतों से दबा राज़ अपने बतलाने लगी।
इश्क़ की आग...

उनकी नज़दीकियाँ दिल लगाने लगीं,
इश्क़ की आग हमें अब जलाने लगी।

(डॉ. आर. पी. राज)

पुस्तक समीक्षा

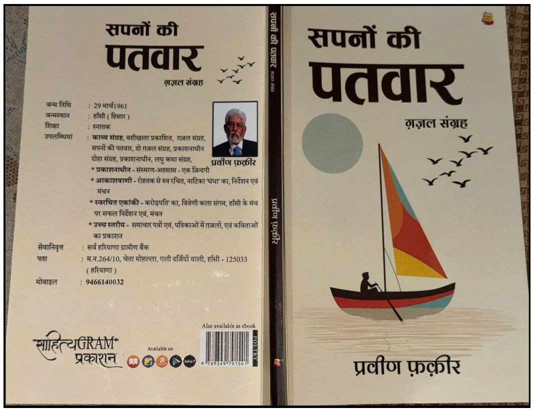

लेखक: प्रवीण फ़क़ीर
पुस्तकः "सपनों की पतवार"
मूल्य: ₹200.00
पृष्ठ: 109
विधा- ग़ज़ल संग्रह
साहियग्राम प्रकाशन

प्रवीण फ़क़ीर का ग़ज़ल संग्रह 'सपनों की पतवार' हिंदी ग़ज़ल को उसके पारंपरिक प्रेम-विरह के आवरण से निकालकर ज़मीन, आम आदमी और सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के धरातल पर खड़ा करता है। फ़क़ीर ने 'बही खाता' जैसे छंद-मुक्त काव्य से यात्रा शुरू कर इस संग्रह में ग़ज़ल विधा को न केवल परिपक्व किया है बल्कि 'लुच्चे', 'बेशर्म', 'सियासत' और बिखरते पारिवारिक रिश्तों जैसे विषयों को बेबाकी से केंद्र में रखा है।

संग्रह का मूल स्वर विद्रोह और प्रश्न का है। फ़क़ीर की ग़ज़लें मानवीय मूल्यों के क्षरण को सीधे शब्दों में उघाड़ती हैं –
'जिहादी सोच के हाथों में पत्थर
मेरे बच्चों को क्यूँ बहका रहे हैं'
तथा

'सियासत खेलती है बस चुनावी खेल इस पर
नहीं तो कुछ नहीं लेना चमारों की गली से'।

ये पंक्तियाँ एक सजग नागरिक की कराह हैं, जो ग़ज़ल की रवायती नज़ाकत से हटकर आम आदमी के दर्द को प्राथमिकता देती हैं।

सबसे साहसिक प्रयोग पिता-पुत्र के बीमार रिश्तों का चित्रण है –
'खुल के रोती है मेरी खामोशियाँ तब
जब मेरी औलाद मुझको डाँटती है'
और

'दीमक बनकर चाट गया ज़र रिश्तों को
दौलत के घर कितने सस्ते होते हैं'।

यहाँ काव्यात्मक सौष्ठव से अधिक मानवीय सच्चाई तरजीह पाती है।

कई स्थानों पर फ़क़ीर ने बेहर, क़ाफ़िया और रदीफ़ का संतुलन साधा है –
'दर्द पीना जिसे नहीं आया
सच में जीना उसे नहीं आया'।

हालाँकि, 'लुच्चे', 'बेशर्म' जैसे शब्दों के बारंबार प्रयोग से प्रतीकात्मकता एकस्वर हो जाती है। कहीं-कहीं बेहर में शिथिलता भी आ जाती है। ग़ज़ल की 'कहने की अदा' और अप्रत्यक्ष प्रहार की कला कभी-कभी प्रत्यक्ष आक्रोश के आगे दब जाती है।

'सपनों की पतवार' एक साहसिक, ज़मीनी और सामयिक ग़ज़ल-संग्रह है। यह ग़ज़ल को अमीरों और माशूकों के हवाले से निकालकर मज़दूर, किसान, लाचार बूढ़े बाप और उत्पीड़ित के हाथों में देता है। फ़क़ीर ने हिंदी ग़ज़ल में एक नया जनवादी मुहावरा गढ़ा है। आशा है कि वे आगे शिल्प की चुस्ती पर भी उतना ही ध्यान देंगे। संग्रह उन पाठकों को पसंद आएगा जो साहित्य में यथार्थ को प्राथमिकता देते हैं।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग